Paper - 8.

Q. What was the Causes of American Success and British failure?

Ans— यद्यपि उपनिवेशों और इंग्लैंड के मध्य युद्ध अनिवार्य नहीं था। उपनिवेशवासी आर्थिक और व्यापारिक स्वतंत्रता चाहते थे। स्थानीय शासन पर वे अपना नियंत्रण चाहते थे। वे लोग England के राजा या Parliament का विरोध नहीं करते थे। England में "चैथम" और "बर्क" जैसे राजनीतिक समझौते पर बल दे रहे थे और उपनिवेशों की आकांक्षाओं का सम्मान करना चाहते थे। दुर्भाग्य से निरंकुश सत्ता में जार्ज तृतीय विश्वास रखता था और कठोरता से प्रजा के विद्रोह को कुचलने की नीति का पक्षधर था। अमेरिकन उपनिवेशों की जनता और इंग्लैंड की अपनी प्रजा में उसने भेद नहीं समझा। यही दृष्टिकोण विनाशकारी सिद्ध हुआ। उसके समय में अन्य राजनीतिज्ञों, जैसे- "ग्रेनविल" और लार्ड नार्थ में दूरदर्शिता का अभाव था। राजा की इच्छा के पालन में ही उन्होंने अपना कर्तव्य समझा। पार्लियामेन्ट के सदस्यों ने स्थिति की गंभीरता को नहीं समझा और सैनिक बल का समर्थन किया। कुछ विद्वानों का मत है कि उपनिवेशवासी स्वतन्त्रता चाहते थे और अगर इस समय संघर्ष टल भी जाता तो बाद में यही स्थिति फिर कभी उत्पन्न हो जाती।

यद्यपि प्रारंभ में इंग्लैंड ने विजय प्राप्त की थी किन्तु अंततः उसे पराजय का सामना करना पड़ा। उसकी पराजय के कारण निम्नलिखित थे:-

(1) अमेरिका को शक्तिहीन समझना:— अंग्रेज अमेरिका की साधन सम्पन्नता से अंजान थे। कृषि उद्योग का विकास अमेरिका में हो चुका था और उपनिवेश समृद्धशाली थे। उपनिवेशवासी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कितने दृढ़ संकल्प थे, अंग्रेजों को इसका लेशमात्र भी अनुमान नहीं था। अंग्रेजों को विश्वास था कि अंग्रेजी सेनाओं का

Page (8)

सामना उपनिवेशवासी नहीं कर पायेंगे। अमेरिका के स्वाधीनता संग्राम को वे केवल एक विद्रोह समझते रहे।

(2) इंग्लैण्ड से अमेरिका की दूरी :- इस युद्ध में अंग्रेजों की पराजय के लिए भौगोलिक कारण भी उत्तरदाई थे। अमेरिका, इंग्लैण्ड से 3,000 मील की दूरी पर था अपनी सेनाएँ तथा रसद सामग्री इंग्लैण्ड को अटलांटिक महासागर को पार कर के भेजनी पड़ती थी। उन्हें अमेरिका में भी लगभग 1,000 मील के जंगलों को पार करना पड़ता था। यह असम्भव स्थिति थी दूसरी ओर अमेरिकी अपने देश में लड़ रहे थे और उनको संचार, यातायात की समस्या से नहीं गुजरना पड़ा।

(3) इंग्लैण्ड का अकेला होना :- इंग्लैण्ड की स्थिति प्रारंभ में संतोषजनक थी, लेकिन जब युद्ध खिंचने लगा, अंग्रेजी सेनाओं का सामना उपनिवेश के लोगोंने साहस और दृढ़ता से किया, तब उन्हें यूरोप के अन्य देशों का समर्थन भी प्राप्त हुआ। इसके लिए उपनिवेशवासियों ने अपना दूत यूरोप भेजा और कूटनीतिक प्रयास किये। इंग्लैण्ड के विरुद्ध फ्रांस, स्पेन और हॉलैण्ड युद्ध में सम्मिलित हो गये। डेनमार्क, स्वीडन, रूस ने सशस्त्र तटस्थ संघ बना लिया। इस प्रकार इंग्लैण्ड अकेला रह गया और उसकी पराजय अनिवार्य हो गई।

(4) अंग्रेजी सेना के अयोग्य सेनापति :- उपनिवेशों की सेना उत्साह, साहस और दृढ़ता से परिपूर्ण थी। उनके सेनापति योग्य तथा दृढ़ संकल्प के व्यक्ति थे। अंग्रेजी सेना एक आक्रमणकारी विदेशी सेना के समान थी। जनता भी इनके विरुद्ध थी। अंग्रेज सेनापति होव और बरगोयने में सहयोग का अभाव था। अंग्रेज युद्ध मन्त्री भी अयोग्य था। सेना भेजने तथा रसद की व्यवस्था की उसने चिन्ता नहीं की। कहा जाता है कि अमेरिका से आयी डाक को खोलने का भी कष्ट नहीं

करता था। फ्रान्सीसी बेड़े को रोकने का उसने प्रयास नहीं किया। उसके पहुँचने से उपनिवेश के बन्दरगाहों की सुरक्षा हो गई और उनकी सेनाओं के साथ मिलकर फ्रेन्च सैनिकों ने अंग्रेजों से युद्ध किया।

(5) जार्ज तृतीय की अयोग्यता :— जार्ज तृतीय के चरित्र का भी अंग्रेजों की पराजय में योगदान था। वह अहंकारी और जिद्दी था। वह स्वयं शासन करना चाहता था और मन्त्रियों के परामर्श की उपेक्षा करता था। वस्तुतः अंग्रेज उसकी व्यक्तिगत नीतियों तथा हस्तक्षेप के कारण ही पराजित हुए। सैनिकों मामलों में भी वह हस्तक्षेप करता था जिससे अव्यवस्था उत्पन्न होती थी। उस समय सबसे योग्य और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ चैथम या बड़ा पिट था। उससे जार्ज तृतीय ने परामर्श करना उचित नहीं समझा और अदूरदर्शी नीति पर चलता था। उसके मन्त्रियों में स्वयं विवेक से कार्य करने की योग्यता का अभाव था। मन्त्रियों में भी एकता नहीं थी। क्लेरटाउन योग्य सेनापति था, उसे हटा कर बरगोयने को सेनापति नियुक्त किया। अमेरिकन उपनिवेशों को खोने के लिये जार्ज तृतीय व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी था। उसके विरोध के कारण ही कोई समझौता नहीं हो सका।

(6) इंग्लैण्ड में राजनीतिज्ञों का अभाव :— इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों तथा जनता में एकमत नहीं थी कि अमेरिका के उपनिवेशों के प्रति किस प्रकार की नीति अपनायी जाये। अपने व्यक्तिगत स्वेच्छाचारी शासन स्थापित करने के लिये जार्ज तृतीय ने ह्विग और टोरी दलों के मतभेदों तथा द्वेषों का लाभ उठाया था। इंग्लैण्ड की जनता को जार्ज तृतीय में विश्वास नहीं था। इंग्लैण्ड में अमेरिकन उपनिवेशों की

स्वतन्त्रता के बहुत-से लोग समर्थक थे। लार्ड चैथम और एडमन्ड बर्क ने पार्लियामेन्ट में इसके लिये जोरदार तरीके से कहा भी था लेकिन जार्ज तृतीय ने पार्लियामेन्ट में अपने समर्थकों को भर रखा था। अत: इस विवेकपूर्ण परामर्श की जार्ज तृतीय ने उपेक्षा की। इंग्लैण्ड में इस समय योग्य राजनीतिज्ञों का अभाव था। सबसे योग्य लार्ड चैथम था। लेकिन गठिया के कारण वह अस्वस्थ था और इंग्लैण्ड की युद्धनीति का संचालन करने में असमर्थ था। लार्ड नार्थ, राकिंघम, शेलबोर्न साधारण योग्यता के व्यक्ति थे। संकट का वास्तविक रूप समझने में ये लोग असमर्थ रहे और गलतियाँ करते रहे। प्रारम्भ में समस्या साधारण थी और उपनिवेशों की आकांक्षा दूरदर्शितापूर्वक पूरी की जा सकती थी।

(7) इंग्लैण्ड की शक्ति का विभाजित होना :- अन्य कठिनाइयों का भी सामना अंग्रेजों को करना पड़ रहा था और उनकी सैनिक शक्ति बँटी हुई थी। भारतवर्ष में फ्रान्सीसियों का सहयोग लेकर हैदरअली अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहा था। आयरलैण्ड में भी विद्रोह के दमन के लिये अंग्रेजी सेना की आवश्यकता थी। फ्रान्स और स्पेन के आक्रमण का यूरोप में भी भय था। अत: अमेरिकी उपनिवेशों के विरुद्ध अंग्रेज अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा सके।

(8) आदर्श में भिन्नता :- उपनिवेश का प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रता के आदर्श से प्रेरित था और इसके लिये संघर्ष तथा बलिदान के लिये तैयार था। अंग्रेजों में इस उच्च आदर्श का

अभाव था। साम्राज्यवाद के लिये वे युद्ध कर रहे थे और उपनिवेशों को गुलाम बना कर रखना चाहते थे। अंग्रेजों की पराजय ऐसी स्थिति में निश्चित थी।

(9) जार्ज वाशिंगटन का नेतृत्व :- अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए उपनिवेश कृत संकल्प थे। उन्होंने संकट के समय एकता स्थापित की और अंग्रेजों से युद्ध किया। सौभाग्य से उन्हें वाशिंगटन का नेतृत्व प्राप्त हुआ। वाशिंगटन दृढ़ निश्चय और उच्च चरित्र का व्यक्ति था। उसमें क्रामवेल के समान योग्य सेनापति के गुण थे। निराशापूर्ण परिस्थितियों में उसने संकटों का सामना धैर्य से किया, संगठित और अनुशासित सेना का निर्माण किया। उसने उपनिवेशों में एकता स्थापित की और सैनिकों को स्वतन्त्रता के लिये प्रेरणा दी।